अतिशय क्षेत्र श्री मक्सीजी

श्री पार्श्वनाथ भगवान की पूजा एवं श्री सुपार्श्वनाथ मण्डल विधान

माण्डला

मध्य : ॐ
प्रथम - 4
द्वितीय - 8
तृतीय - 16
चतुर्थ - 32
कुल : 60 अर्घ्य

विधान रचयिता-
परम पूज्य साहित्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी मुनिराज

कृति	:	**श्री मक्सीजी पार्श्वनाथ की पूजा एवं श्री सुपार्श्वनाथ विधान**
कृतिकार	:	परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2025, प्रतियाँ - 1000
संकलन	:	स्थविर मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज मुनिश्री विश्वाक्षरसागरजी, मुनिश्री विभोरसागरजी मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संयोजन	:	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425 ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. श्री महेन्द्र जैन, दिल्ली -मो.: 9810570747 3. हरीश जैन, दिल्ली - मो.: 9136248971 4. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी मो.: 9416888879 5. नीरज जैन, लखनऊ मो. 94512-51308 6. जैन मंदिर, गुलाब वाटिका, दिल्ली मो.: 9818570432
मुद्रक	:	डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर - मो.: 9826014047

पुण्यार्जक :

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मक्सी, शाजापुर (म.प्र.)

❖ अध्यक्षा - श्रीमती पुष्पा प्रदीप कासलीवाल

❖ उपाध्यक्ष - आदित्य कासलीवाल, नरेन्द्र कुमार जैन (बीड़ीवाले), श्रीमती वीरबाला कासलीवाल, राजेन्द्र कुमार जैन (राज)

❖ महामंत्री - राजकुमार पाटोदी ❖ अति. महामंत्री - कमलेश कासलीवाल

❖ मंत्री - बाहुबली पांड्या , कीर्ति पांड्या

एवं समस्त प्रबंधकारिणी सदस्य - मो.: 8982961343

मक्सी पार्श्वनाथः एक अद्भुत और चमत्कारिक तीर्थ

मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले में स्थित मक्सी पार्श्वनाथ तीर्थ, केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आस्था और चमत्कारों का प्रतीक है। उज्जैन से 38 किलोमीटर और इंदौर से 72 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह तीर्थ, मक्सी रेलवे स्टेशन से मात्र 3 किलोमीटर दूर है। यह स्थान जैन धर्मावलंबियों के लिए खास महत्व रखता है और अपनी ऐतिहासिकता व अद्भुत घटनाओं के कारण सभी को आकर्षित करता है ।

एक किदवन्ती के अनुसार मक्सी पाशर्वनाथ क्षेत्र आचार्य श्री भद्रबाहु के समय का बताया गया है कालदोष के कारणा मंदिर भूगर्भ में समा गया एवं विप्र को स्वप्न अनुसार खुदाई करने पर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा प्राप्त हुई ।

गजनवी की कहानी: जब आस्था ने बदल दिया इतिहास – कहानी है महमूद गजनवी की, जिसने मक्सी पहुँचने पर मंदिर को तोड़ने की योजना बनाई। लेकिन उसी रात वह इतनी गंभीर बीमारी का शिकार हो गया कि उसे अपनी भूल का एहसास हुआ। उसने इसे भगवान पार्श्वनाथ का चमत्कार माना और मंदिर को नुकसान न पहुँचाने का आदेश दिया। पश्चाताप स्वरूप उसने मंदिर के मुख्य द्वार पर पाँच ईरानी शैली के कंगूरे बनवाए। ये कंगूरे आज भी इस घटना का प्रमाण हैं और मंदिर की सुरक्षा का प्रतीक माने जाते हैं।

मक्सी पार्श्वनाथ एक ऐसा तीर्थ है, जहाँ चमत्कार और आस्था के अनूठे किस्से हर किसी को अपनी ओर खींचते हैं। यह स्थान सिर्फ जैन धर्म के अनुयायियों के लिए नहीं, बल्कि उन सभी के लिए प्रेरणास्रोत है, जो धर्म और चमत्कारों में विश्वास रखते हैं। इस पवित्र स्थल की यात्रा, न केवल आपकी आस्था को प्रबल करेगी, बल्कि आपको एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव से भी भर देगी।

कुछ समय से दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदाय में विवाद की स्थिति में प्रातकाल 6 से 9 बजे तक दिगम्बर सम्प्रदाय अपनी दिगम्बर परम्परा अनुसार उसके बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय पूजा अभिषेक करता है । परम पूज्य आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने मसी पाशर्वनाथ एवं छोटे मंदिर श्री का सुपार्श्वनाथजी का पूजा विधान रचकर भक्ति का आलम्बन प्रदान किया । गुरुवर के चरणों में शत् शत् नमन....

(स्थविर : मुनिश्री विशाल सागर)

श्री मक्सीजी पार्श्वनाथ भगवान की पूजा

''स्थापना''

मध्यप्रदेश जिला शाजापुर, मक्सी जी में पारसनाथ ।
भू से प्रकट हुई है प्रतिमा, जिन पद झुका रहे हम माथ ।
चमत्कार फैला चारों दिश, भव्य जीव करते यशगान ।
श्याम रंग में शोभा पाएँ, परम पूज्य पारस भगवान ॥

दोहा :

आओ पधारो मम हृदय, तीर्थंकर जिनराज ।
आह्वानन् करते हृदय, तीन योग से आज ॥

ॐ ह्रीं श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

संयम मय निर्मल जल लेकर, जिन पद धार कराए हैं ।
रोग नाश करके जन्मादिक, जिन गुण पाने आए हैं ॥
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ॥ 1 ॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

समतामय चंदन लेकर के, आज चढ़ाने लाए हैं ।
भव संताप नाश करने को, जिन चरणों में आए हैं ॥
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, कई चमत्कार दिखलाए है ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए है ॥ 2 ॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव के अक्षत लेकर, जिन चरणों में लाए हैं ।
अक्षय पद पाने को अनुपम, जिन चरणों में आए हैं ।।
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव के पुष्प सजाकर, थाल में यह भर लाए हैं ।
काम रोग यह लगा अनादी, उसको हरने आए हैं ।।
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव के सुचरू बनाकर, पूजा करने आए हैं ।
क्षुधा रोग के समन हेतु हम, थाल सजाकर लाए हैं ।
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव का दीप जलाकर, जिन चरणों में लाए हैं ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, ज्ञान जगाने आए हैं ।।
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव की धूप बनाकर, अग्नि में खेने लाए हैं ।
नाश हेतु हम अष्ट कर्म के, भाव बनाकर आए हैं ॥
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव के फल हैं अनुपम, सरस सु सुन्दर लाए हैं ।
मोक्ष महाफल पाने को हम, चरण शरण में आए हैं ॥
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

समता भाव का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं ।
पद अनर्घ्य पाने हे भगवन !, चरण शरण में आए हैं ॥
मक्सी जी के पार्श्वनाथजी, चमत्कार दिखलाए हैं ।
श्री जिनवर की पूजा करने, आज यहाँ पर आए हैं ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तेय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा - शांती का दरिया बहे, श्री जिनवर के द्वार ।
विशद शांति पाने चरण, देते शांती धार ॥
(शान्त्ये शांतिधारा)
दोहा - पुष्पाञ्जलि करते चरण, भक्ति भाव के साथ ।
शिव पद पाने के लिए, झुका रहे पद माथ ॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

''पंचकल्याणक के अर्घ्य''

(चौपाई छन्द)

द्वितिया कृष्ण वैशाख कहाए, गर्भ में पार्श्व प्रभुजी आए ।
भाव से हम जिन महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितियायां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी पाए, जन्म कल्याणक प्रभु जी पाए ।
भाव से हम जिन महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥2॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण ग्यारस को स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी ।
भाव से हम जिन महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥3॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णा चैत चतुर्थी पाए, प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए ।
भाव से हम जिन महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां केवल ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल सप्तमी आए, प्रभु जी शिवपुर धाम बनाए ।
भाव से हम जिन महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

''जयमाला''

दोहा :

मक्सीजी के पार्श्व जिन, महिमामयी महान ।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान ॥

(शम्भू छंद)

श्री पार्श्वनाथ करुणा निधान, महिमा महान मंगलकारी ।
तुम मक्सी जी में प्रकट हुए, भू गर्भ से हे जिन त्रिपुरारी ! ॥
कुछ विद्वान यहाँ यह मान रहे, कि भद्रबाहु स्वामी आए ।
जो चंद्रगुप्त को प्रेरित कर, यह मूर्ती मंदिर बनवाए ॥

कुछ काल बीतने पर मंदिर, जमीदोज वहीं हो जाता है ।
जिनबिम्ब साथ ही मंदिर भी, उस भूमी में खो जाता है ॥
एक विप्र कहीं से आकर के, जल का इक प्याऊ लगाता है ।
इक बार विप्र को रात्री में, सुन्दर सा सपना आता है ॥

सुन्दर इक मूर्ति यहाँ पर है, वह खोद निकालो हे भाई ।
शुभ नीर पिलाने से ब्राह्मण, अब पुण्य घड़ी तुमरी आई ॥
वह मूर्ति खोद निकाली तो, उसमें सिन्दूर लगाता था ।
भैरव मान के प्रतिमा के, आगे शुभ दीप जलाता था ॥

एक सेठ को क्रोधित होकर के, नृप ने बंदीगृह में डाला ।
आखिर इक दिन उस ब्राह्मण से, उसका पड़ जाता है पाला ॥
तब देख सेठ ने प्रतिमा को, मन में ये भाव बनाए थे ।
हम छूट जाए बंदी गृह से, ये भाव हृदय में आए थे ॥

वह छूट के बंदीगृह से फिर, मित्रों को साथ में लाता है ।
मंदिर निर्माण कराकर वह, वेदी पर उन्हें बिठाता है ॥
गजनबी मूर्तियाँ मंदिर कई, खंडित कर मक्सी आता है ।
मंदिर को खंडित करने का वह, मन में भाव बनाता है ॥

वह हो जाता बीमार तभी, फिर मन में वह घबराता है ।
फिर क्षमा याचना करने से वह, स्वस्थ पूर्ण हो जाता है ॥
फिर पाँच कंगूरे मंदिर में, जाकर के वह बनवाता है ।
नत होकर के प्रभु के चरणों , वापिस वह घर को जाता है ॥

इक बार चोर चोरी करने, जिन मंदिर में घुस जाते है ।
वे अंधेवत होकर घूमे, मंदिर से निकल न पाते है ॥
मधु मक्खियों द्वारा भी सारे, वे चोर सताए जाते है ।
न चोरी कभी करेंगे हम, सौगंध वहीं पर खाते है ॥

प्रातः छह से नौ बजे समय, रहता है जैन दिगंबर का ।
फिर पूजा भक्ति अर्चा का, होता है समय श्वेताम्बर का ॥
यहाँ संत मुनि जो भी आते, श्री जिन के दर्शन पाते है ।
श्रावक जिनकी पूजा करके, अपने सौभाग्य जगाते है ॥

दोहा : **रहे दिगम्बर गेह में, जिन सुपार्श्व भगवान ।**
जिनकी अर्चा कर 'विशद', होय जीव कल्याण ॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र मक्सी पार्श्वनाथ स्थित सर्वसंकटहारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा : **मनोकामना पूर्ण हो, मक्सीजी में आय ।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य वह, आके यहाँ जगाय ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं ।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं ॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं ।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं ॥

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री मक्सी पार्श्वनाथ तीर्थ चालीसा

''दोहा''

प्रकट हुए भूगर्भ से, पार्श्वनाथ भगवान ।
मक्सीजी शुभ तीर्थ है, महिमामयी महान ॥
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर ।
हरी भरी खुशहाली हो, धरती चारों ओर ॥

''चौपाई''

जय जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी ॥1॥
वैजयंत से चयकर आये, काशी नगरी धन्य बनाए ॥2॥
अश्वसेन के लाल कहाए, माता वामा देवी पाए ॥3॥
हरित वर्ण तन का शुभ पाए, नाग चिन्ह धारी कहलाए ॥4॥
सौ वर्षों की आयू पाई, रही हाथ नौ की ऊँचाई ॥5॥
तापस वन में आग जलाए, नाग युगल तन जलते पाए ॥6॥
उसको प्रभु णमोकार सुनाए, मर के देव गति को पाए ॥7॥
प्रभु जी तब वैराग्य जगाए, निज आतम का ध्यान लगाएँ ॥8॥
तपसी तप के फल को पाए, देव गति में जो उपजाए ॥9॥
प्रभु को देख के बैर जगाए, पत्थर पानी जो बरसाए ॥10॥
धरणेन्द्र पद्मावती तब आए, प्रभु का जो उपसर्ग हटाए ॥11॥
प्रभु तब केवल ज्ञान जगाए, फिर सम्मेद शिखर पे आए ॥12॥
स्वर्ण भद्र शुभ कूट कहाए, जहाँ से प्रभुजी मुक्ती पाए ॥13॥
शाजापुर इक जिला कहाए, मक्सी नगर उसी में आए ॥14॥
चलकर विप्र यहाँ पर आए, प्याऊ जल की यहाँ लगाए ॥15॥
लोगों को जो नीर पिलाए, वह जीवन में पुण्य कमाए ॥16॥
रात में उसको सपना आया, मानो उसका भाग्य जगाया ॥17॥
मूर्ती यहाँ दबी है भाई !, विप्र ने जाकर करी खुदाई ॥18॥
श्याम रंग की मूर्ती पाई, खुशी हृदय में उसके छाई ॥19॥

मूर्ती में सिन्दूर लगाया, भैरव मूर्ति को बतलाया ॥20॥
लोग मनौती लेकर आते, इच्छित फल कई प्राणी पाते ॥21॥
सेठ का नृप से पड़ता पाला, सेठ को बंदीगृह में डाला ॥22॥
लड़का इस स्थान पे आता, मन में जो यह भाव बनाता ॥23॥
पिता मुक्त मेरे हो जाएँ, दर्शन करने उनको लाएँ ॥24॥
नृप ने सेठ को मुक्ति दिलाई, मन में हर्ष बड़ा तब भाई ॥25॥
इष्ट मित्र सब साथ में आए, सुन्दर जिन मंदिर बनवाए ॥26॥
दूर-दूर से यात्री आते, प्रभु दर्शन करके हर्षाते ॥27॥
गजनबी मूर्ति तोड़ने आया, उसने डेरा यहाँ जमाया ॥28॥
बीमारी ने उसे सताया, प्रातः पलंग से उठ न पाया ॥29॥
क्षमा क्षमा उसने की भारी, उसकी दूर हुई बीमारी ॥30॥
पाँच कंगूरे वह बनवाए, प्रभु की जो जयकार लगाए ॥31॥
चोर यहाँ चोरी को आते, मंदिर का सामान उठाते ॥32॥
किन्तू वे अंधे हो जाते, बाहर निकल नहीं वे पाते ॥33॥
प्रातः होते पकड़े जाते, पाप की सजा स्वयं वे पाते ॥34॥
चोर त्याग चोरी का करते, प्रभु से तब वे भारी डरते ॥35॥
प्रतिमा की अनुपम प्रभताई, सारे जग ने जानी भाई ॥36॥
प्रातः छह से नौ तक जाने, जैन दिगम्बर आते मानो ॥37॥
जिनाभिषेक पूजा जो करते, आरती चालीसा भी पढ़ते ॥38॥
फिर श्वेताम्बर जैनी आते, भक्तिभाव से महिमा गाते ॥39॥
भक्ती का फल प्राणी पाए, सुख शांती सौभाग्य जगाए ॥40॥

दोहा :

श्री जिनवर के सामने, भक्ति भाव के साथ ।
चालीसा जो भी पढ़े, होय श्री का नाथ ॥
दुखियों के दुख दूर हो, विशद जगाएँ भाग्य ।
सुख शांती आनंद होय, पाए वे सौभाग्य ॥

श्री मक्सी पार्श्वनाथजी की आरती

तर्ज : आज थारी आरती उतारूँ...

मक्सी के पारसनाथ, आज थारी आरती उतारूँ ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ-2 ॥
कर दो भव से पार, आज थारी आरती उतारूँ ॥ टेक ॥
क्षेत्र की पुण्य घड़ी शुभ आई, ब्राह्मण ने यहाँ प्याऊ लगाई ।
सबको शीतल नीर पिलाया, उसका पुण्य उदय में आया ॥
हुआ स्वप्न साकार, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 1 ॥
विप्र ने भू की करी खुदाई, प्रभु की प्रतिमा उसने पाई ।
प्रतिमा में सिन्दूर लगाया, भैरव बाबा उसे बनाया ॥
हुए कई चमत्कार, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 2 ॥
सेठ को नृप ने सजा सुनाई, बंदी गृह में डाला भाई ।
उसने यहाँ भावना भाई, बंदीगृह से मुक्ती पाई ॥
माना जो आभार, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 3 ॥
मित्रों को जो संग में लाया, आकर जिन मंदिर बनवाया ।
उत्सव हुआ यहाँ पर भाई, प्रतिमा मंदिर में पधराई ॥
किए सभी जयकार, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 4 ॥
महमूद गजनवी यहाँ पे आता, घोर बीमार यहाँ हो जाता ।
स्वास्थ लाभ प्रभु पद में पाता, पाँच कंगूरे जो बनवाता ॥
महिमा है अपरम्पार, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 5 ॥
चोर यहाँ चोरी को आते, अंधवत् वे सब हो जाते ।
मंदिर से वे निकल न पाते, प्रातः होते पकड़े जाते ।
मधु मक्खियों ने दीन्हा त्रास, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 6 ॥
जैन दिगम्बर प्रातः आते, छह से नौ तक न्हवन कराते ।
जैन श्वेताम्बर फिर आ जाते, अपने मत से पूज रचाते ॥
करें 'विशद' गुणगान, आज थारी आरती उतारूँ ॥ 7 ॥

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की पूजा विधान

''स्थापना''

नगर बनारस में चय करके, मध्यक ग्रीवक से आए ।
सुप्रतिष्ठ माँ पृथ्वीसेना, के सुत जिन सुपार्श्व गाए ॥
देव रत्नवृष्टी करके शुभ, प्रभु की बोले जय जयकार ।
जन्मोत्सव पर बजी बधाई, हर्षित हुआ देव परिवार ॥

दोहा - गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए मोक्ष कल्याण ।
जिन सुपार्श्व का हम हृदय, में करते आह्वान ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(विधाता छन्द)

ज्ञान अभ्यास जल लाए, तत्त्व ज्ञानी बनें स्वामी ।
जन्म मरणादि त्रय दुखहर, निजानन्दी बनें नामी ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान अभ्यास का चंदन, श्रेष्ठ शीतल सुगंधित हैं ।
भवातप नाश करने में, जगत में जीव का हित हैं ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास के अक्षत, तत्त्व का ज्ञान देते हैं ।
स्व पद अक्षय प्रदायी जो, विशद विज्ञान देते हैं ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! अक्षय पद प्राप्तेय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व के सुन्दर, पुष्प है काम के नाशी ।
शील गुण से सुशोभित कर, बनाएँ मोक्षपुर वासी ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास के चरूवर, कभी हमने नहीं पाए ।
क्षुधा की व्याधि क्षय करने, यहाँ पर आज हम आए ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास के दीपक, ज्ञान पावन जगाते हैं।
मोहतम है अनादी जो, उसे प्रभुजी भगाते हैं ।
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास की पावन, ध्यानमय धूप है सुंदर ।
कर्म वसु नाश कर देती, निरंजन पद विशद देकर ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास के फल से, मोक्ष फल प्राप्त हो जाए ।
मुक्ती रमणी से हो परिणय, चेतना का सरस आए ॥

श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास इस जग में, हृदय अपने जगाते हैं ।
अनर्घ्य पद प्राप्त करके वे, स्वयं ही मोक्ष पाते हैं॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)- शांती पाने के लिए, देते शांती धार
अष्ट कर्म को नाशकर, पाएँ भवदधि पार ।

''शान्तेय शांतिधारा''

पुष्पाञ्जलि करते विशद, पुष्प लिए ये हाथ ।
जागे भक्ती हृदय में, झुका रहे पद माथ ॥

''पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्''

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

भादव सुदी षष्ठी शुभ आए, प्रभुजी गर्भ कल्याणक पाए ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भाद्रपद शुक्ल षष्ठी दिने गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ सुदी बारस को जानो, प्रभु का जन्म कल्याणक मानो ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस को भाई, जिन सुपार्श्व ने दीक्षा पाई ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि षष्ठी को स्वामी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुन कृष्ण षष्ठी दिने केवल ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातै को स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुन कृष्ण सप्तमी दिने मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सुप्रतिष्ठ के लाड़ले, पृथ्वी माँ के लाल ।
श्री सुपार्श्व जिनराज की, गाते हैं जयमाल ॥

(ज्ञानोदय छन्द)

यश गौरव गूँज रहा जिनका, धरती से चाँद सितारों तक ।
मंगल होता जिनके द्वारा, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक ॥
लखकर के जिनकी महिमा, सौधर्म इन्द्र भी शर्माया ।
जिनके अनुपम गुण गाने को, खुश हो भक्ती को आया ॥1॥
चय करके मध्ययम ग्रीवक से, प्रभु नगर बनारस में आए ।
माँ पृथ्वी सेना सुप्रतिष्ठ, नृप के गृह में मंगल छाए ॥
भादों शुक्ला षष्ठी तिथि को, अवतरण आपने पाया था ।
फिर ज्येष्ठ शुक्ल की बारस को, जन्मोत्व अवशर आया था ॥2॥

आयू प्रभू बीस लख पूरव, स्वस्तिक लक्षण पद में पाए ।
ऊँचाई दौ सौ धनुष रही, प्रभु हरित वर्ण के कहलाए ॥
वृक्षों की पतझड़ देख प्रभू, मन में वैराग्य जगाए हैं ।
प्रभू ज्येष्ठ शुक्ल की बारस को, पावन संयम अपनाए हैं॥3॥
तन से चेतन को भिन्न जान, निज आतम में रम जाते हैं ।
फिर फाल्गुन कृष्ण षष्ठी को, निज केवल ज्ञान जगाते हैं॥
तब धनकुबेर यहाँ आकर के, शुभ समवशरण बनवाता है ।
सौधर्म इंद्र भी आकर के शुभ, जय जयकार लगाता है ॥4॥
गणधर पंचानवे जिनवर के, बलदत्त प्रथम कहलाए है ।
ये ढाई लाख मुनिवर ज्ञानी, जो सद् संयम अपनाए है ॥
या यक्ष विजय यक्षी काली जो, रक्षक देह कहाते हैं।
प्रभू कूट प्रभाष सम्मेद शिखर, करके विहार फिर जाते हैं॥5॥

दोह- फाल्गुण वदि सातें प्रभू, करके कर्म विनाश ।
मुक्ती पथ पर बढ़ चले, शिवपुर कीन्हा वास ॥

ॐ ह्रीं सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभू की अर्चा जो करें, भक्ती भाव के साथ ।
सुख शांती सौभाग्य पा, बनें श्री के नाथ ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

श्री सुपार्श्वनाथ विधान की अर्घ्यावली

प्रथम वलय :

दोहा - अनंत चतुष्टय प्राप्त कर, बनते हैं अर्हन्त ।
शिव पद पाते हैं विशद, करे कर्म का अन्त ॥

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रभु 'ज्ञानावरणी' कर्म नाश, जो विशद ज्ञान करते प्रकाश ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहित अनंत ज्ञान गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म 'दर्शनावरण' नाश, दर्शन गुण में जो करें वास ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'मोह कर्म' करते विनाश, सम्यकत्व सुगुण करते प्रकाश ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ॥3॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित सम्यकत्व गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कर्म' अन्तराय' करें नाश, जो वीर्यान्त में करें वास ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ॥4॥

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहित अनंत वीर्य गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म घातिया कर विनाश, प्रगटाएँ चतुष्टय प्रभू खास ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ॥5॥

ॐ ह्रीं घातिया कर्म रहित अनन्त चतुष्टय गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

(दोहा)

तीर्थंकर पद प्राप्त कर, बनते हैं प्रभू आप्त ।
समवशरण में शोभते, प्रातिहार्य हों प्राप्त ॥

(अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

'तरु अशोक' है शौक निवारी, समवशरण में मंगलकारी।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥1॥

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष महा प्रातिहार्य सहित समवशरण में विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिंहासन' पर प्रभु जी सोहें, जग जन के मन को जो मोहे।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥2॥

ॐ ह्रीं सिंहासन महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'छत्रत्रय' प्रभुता दिखलाते, तीन लोक में प्रभू कहाते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥3॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भामण्डल' है महिमाशाली, प्रभु की जानो शान निराली।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥4॥

ॐ ह्रीं भामण्ड महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिव्य देशना' प्रभु सुनाते, प्राणी श्रद्धा ज्ञान जगाते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥5॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुन्दुभि बाजे' देव बजाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥6॥

ॐ ह्रीं सुर दुन्दुभी महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देव चँवर' लेकर के आते, हर्षित होकर स्वयं ढुराते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥7॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चामर महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्पवृष्टि' करते शुभकारी, देव यहाँ आके मनहारी ।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥8॥

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य ये अष्ट कहाए, श्री जिन की महिमा दिखलाए ।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥9॥

ॐ ह्रीं अष्ट महाप्रातिहार्य सहित समवशरण में विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

(दोहा)

सोलहकारण भावना, भाते हैं भगवान ।
जिसके फल से प्राप्त हो, शिव पद का सोपान ॥

(अथ तृतिय वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

सोलहकारण भावना (चौपाई)

'दर्श विशुद्धी' प्रथम कहाई, जग में जो आवश्यक गाई ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥1॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धिभावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विनय सम्पन्न' भावना भाए, जग प्रभुता वह प्राणी पाए ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥2॥

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनतिचार व्रत' शील का धारी, कहा गया शिव का अधिकारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥3॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग' पाए, विशद ज्ञान वह जीव जगाए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥4॥

ॐ हीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'संवेग भाव' का धारी, ज्ञानी जग में मंगलकारी।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥5॥

ॐ हीं संवेग भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव होय 'शक्ति सः त्यागी', जग में कहा गया बड़भागी।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥6॥

ॐ हीं शक्तिस्यत्याग भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'शक्ति सः तप' को पाए, अपने सारे कर्म झराए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥7॥

ॐ हीं शक्तितस्तपो भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साधु समाधि' जो करें कराए, प्राणी अतिशय पुण्य कमाए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥8॥

ॐ हीं साधु समाधि भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वैय्यावृत्ती' जिसको भाए, वह अपना सौभाग्य जगाए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥9॥

ॐ हीं वैय्यावृत्यकरण भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हद् भक्ती' है शुभकारी, भवि जीवों के पाप निवारी।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥10॥

ॐ हीं अर्हद् भक्ती भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आचार्य भक्ती' करने वाले, जग में होते जीव निराले।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥11॥

ॐ हीं आचार्य भक्ती भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ती करें कराएँ, सम्यक् ज्ञान जीव वे पाएँ ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥12॥

ॐ ह्रीं बहु श्रुतभक्ती युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रवचन भक्ती की महिमा न्यारी, सम्यग्ज्ञान प्रकाशनधारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥13॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ती भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक अपरिहार्य के धारी, होते हैं शिव के अधिकारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥14॥

ॐ ह्रीं आवश्यका परिहाणि भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग प्रभावना ऋषिवर पाएँ, जीवों को सत् मार्ग दिखाएँ ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥15॥

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते 'प्रवचन वत्सल' धारी, जीव होय शिव के भर्त्तारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥16॥

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य भावना सोलह भाते, तीर्थंकर पद वे नर पाते ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥17॥

ॐ ह्रीं दर्श विशुद्धयादि षोडशकारण भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

(दोहा)

पूज्य हैं बत्तिस देव से, तीर्थंकर भगवान ।
जो प्रभु की अर्चा करें, पावें शिव सोपान ॥

॥ अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

''बत्तिस देव पूजित जिन'' (मोतियादाम छन्द)

इंद्र कहलाए असुर कुमार, साथ में लाए निज परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं असुर कुमारेण सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र कहलाए नागकुमार, भक्त बन आए सह परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।2।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र विद्युत कुमार शुभकार, भक्त को आए सह परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र कहलाए सुपर्ण कुमार, भक्ति को आए प्रभु के द्वार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहलाए अग्निकुमार, करे जिन पूजा जो शुभकार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।5।।

ॐ ह्रीं अग्नि इंद्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहलाए वात कुमार, प्रभू पद पूजे मंगलकार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।6।।

ॐ ह्रीं वातकुमार परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहाए स्तनितकुमार, करे भक्ती से जिन उपकार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र है पावन उदधिकुमार, भक्ति का नहीं है पारावार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥8॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहलाए दीपकुमार, दीप से पूजे सह परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥9॥

ॐ ह्रीं दीपेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए दिक्कुमार शुभ इन्द्र, प्रभू के पूजे चरणारविन्द ।
करें जिन अर्चा बारम्बार, चरण में आके बारम्बार ॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का किन्नर देव, प्रभू के पूजे चरण सदैव ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुष व्यंतर का है इन्द्र, पूजता प्रभु के चरणारविन्द ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुष परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरग व्यंतर का है इन्द्र, साथ में भक्ति करे अनिन्द्र ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥13॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का गाया यक्ष, प्रभु की भक्ति में है दक्ष ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥14॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का है गंधर्व, पूजते देव प्रभु पद सर्व ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥15॥

ॐ ह्रीं गंधर्व इंद्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का राक्षस जान, करे जो भाव से प्रभु गुणगान ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत व्यंतर का महिमावान, इन्द्र प्रभु भक्ति करे महान ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥17॥

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का रहा पिशाच, करे प्रभु भक्ति जो नाच-नाच ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र ज्योतिष का चंद्र कहाय, प्रभु भक्ति करने को आय ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥19॥

ॐ ह्रीं चंद्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य ज्योतिष का इन्द्र महान, प्रभु की पूजा करे विधान ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥20॥

ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

सौधर्म इन्द्र कहलाए, जो जिन पूजा को आए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्र शुभकारी, जिन भक्त है मंगलकारी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥22॥

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत कुमार कहलाए, जिन अर्चा कर हर्षाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥23॥

ॐ ह्रीं सानतकुमार इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र मनहारी, जग जीवों का उपकारी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ब्रह्म इन्द्र सद्ज्ञानी, जिन भक्त परम कल्याणी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र है महिमाशाली, जिन भक्ति जाय न खाली ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकेन्द्र प्रभु को ध्याए, जो पूजा पाठ रचाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र प्रभु को ध्याए, अतिशय जिन महिमा गाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र परम अनुरागी, जिन पद पूजक बड़भागी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ।।29।।

ॐ ह्रीं आनत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र भक्ति को आए, नत हो जिन महिमा गाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र की महिमा न्यारी, जिन भक्त है मंगलकारी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥31॥

ॐ ह्रीं आरण इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र रहा जग जाना, जिनवर का भक्त पुराना ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस ये इन्द्र कहाए, जिनवर के अनुचर गाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥33॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- गुण गाने जिनराज के, भक्त हुए वाचाल।
श्री सुपार्श्व जिनराज की, गाते हैं जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

सुर नर मुनि गणधर आदिक सब, जिनका ध्यान लगाते हैं।
जिनवर सुपार्श्व जग में पावन, यशगान आपका गाते हैं॥
जो ध्यान आपका करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो शरण प्राप्त करते प्रभु की, उनके संकट कट जाते हैं॥1॥
प्रभु स्वर्ग लोक से चय करके, काशी नगरी में चय आए।
पृथ्वी सेना नृप सुप्रतिष्ठ, के गृह में शुभ मंगल छाए॥
स्वर्गों के इन्द्र सभी मिलकर, प्रभु के कल्याण मनाते हैं।
पूजा करते हैं भाव सहित, जिनवर की महिमा गाते हैं॥2॥

भव सुख की जिनको चाह नहीं, वे दुख से भय ना खाते हैं।
वे क्षय करके निज कर्मों को, भव सागर से तिर जाते हैं॥
है निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप जिनने पाया।
ऐसे अनुपम पद पाने को, अन्तर्मन मेरा ललचाया॥3॥
हैं अष्ट कर्म के कष्ट बड़े, जो भव में भ्रमण कराते हैं।
जो शरण आपकी आ जाते, वे मोक्ष महापद पाते हैं॥
अतिशय महान तुमने पाए, तुममें आनंद समाया हैं।
तुम हो ज्ञाता दृष्टा प्रभुवर, तुमने अर्हत् पद पाया है॥4॥
तुम दिव्य देशना देकर के, निज का स्वभाव दर्शाते हो।
जग में जो भव्य जीव रहते, उनको शिव मार्ग दिखाते हो॥
जो पथ जिनवर ने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
जो बनता अनुयायी प्रभु का, वह परम मोक्ष पद पाता है॥5॥

(दोहा)-उच्च धनुष दो सौ रहे, स्वस्तिक लक्षण वान।
हरित रंग में शोभते, जिन सुपार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न विनाशक सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)-महिमा गाते आपकी, विशद भाव के साथ।
मुक्ती हो संसार से, हे त्रिभुवन के नाथ!॥

॥ इत्याशीर्वाद॥

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री आदिसागरजी, का शांतिसागराचार्यप्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर॥
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदंत गुरु विराग सिन्धुपद, वंदन मेरा विशद सादर॥

ॐ ह्रीं सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

(दोहा)

परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार ।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार ॥
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम ।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम ॥

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी ॥1॥
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता ॥2॥
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा ॥3॥
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥4॥
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी ॥5॥
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी ॥6॥
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए ॥7॥
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो ॥8॥
मध्यम ग्रीवक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए ॥9॥
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी ॥10॥
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए ॥11॥
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो ॥12॥
अग्रिमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी ॥13॥
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया ॥14॥
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो ॥15॥
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया ॥16॥
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया ॥17॥
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी ॥18॥
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी ॥19॥

पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए ॥20॥
ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो ॥21॥
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए ॥22॥
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए ॥23॥
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई ॥24॥
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए ॥25॥
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो ॥26॥
प्रभु आहार क्षीर का कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें ॥27॥
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बिताया भाई ॥28॥
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो ॥29॥
सौ-सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए ॥30॥
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया ॥31॥
सौ योजन का है शुभकारी, तरु श्रेष्ठ अशोक मनहारी ॥32॥
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए ॥33॥
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए ॥34॥
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई ॥35॥
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए ॥36॥
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो ॥37॥
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ती पाए अनुगामी ॥38॥
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली ॥39॥
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ ॥40॥

(दोहा)

चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बनें श्री के नाथ ॥
सुख समृद्धी बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप ॥
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप ॥

श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

(तर्ज- आज करें हम.....)

जिन सुपार्श्व की करते हैं शुभ, आरति मंगलकारी ।
दीप जलाकर लाए हैं हम, जिनवर के दरबार ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥1॥

स्वर्ग लोक से इन्द्र अनेकों, नगर बनारस आए ।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, नगरी खूब सजाए ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥2॥

पृथ्वीमति माता की कुक्षि, को प्रभु धन्य बनाए ।
पिता प्रतिष्ठित सुनकर के तब, मन ही मन हरषाए ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥3॥

षष्ठी शुक्ला भादों को प्रभु, स्वर्ग से चयकर आये ।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को प्रभु का, जन्म कल्याण मनाये ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥4॥

दो सौ धनुष की रही ऊँचाई, लक्षण स्वस्तिक जानो ।
बीस लाख पूरब की आयु, जिन सुपार्श्व की मानो ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥5॥

ज्येष्ठ सुदी बारस को प्रभु ने, उत्तम तप को पाया ।
षष्ठी कृष्ण माह फाल्गुण को, केवल ज्ञान जगाया ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥6॥

करें आरती विशद भाव से, वह सौभाग्य जगाएँ-2 ।
सुख शान्ति आनन्द प्राप्त कर, अन्तिम शिव पद पाएँ ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥7॥